भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

मासिक साहित्य पत्रिका
वर्ष-५, अंक-५२, नवम्बर-२०२५

बाल उजास

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-५, अंक-५२, नवम्बर-२०२५

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुड़ने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

नवम्बर २०२५

साका कैलेण्डर-१९४७, विक्रम संवत-२०८२, अयान-दक्षिणायन, ऋतु-शरद

सोम		03 कार्तिक शु. द्वादशी/ त्रयोदशी, सोम प्रदोष व्रत	10 मार्गशीर्ष कृ. षष्ठी	17 मार्गशीर्ष कृ. त्रयोदशी, सोम प्रदोष व्रत	24 मार्गशीर्ष शु. चतुर्थी, विनायक संकष्टी चतुर्थी
मंगल		04 कार्तिक शु. चतुर्दशी, मणिकर्णिका स्नान	11 मार्गशीर्ष कृ. सप्तमी	18 मार्गशीर्ष कृ. त्रयोदशी, मासिक शिवरात्रि	25 मार्गशीर्ष शु. पंचमी, विवाह पंचमी
बुध		05 कार्तिक शु. पूर्णिमा, देव दीवाली, गुरु नानक जयंती	12 मार्गशीर्ष कृ. अष्टमी, मासिक कृष्ण जन्माष्टमी,	19 मार्गशीर्ष कृ. चतुर्दशी	26 मार्गशीर्ष शु. षष्ठी, स्कन्द षष्ठी
गुरू		06 मार्गशीर्ष कृ. प्रतिपदा	13 मार्गशीर्ष कृ. नवमी	20 मार्गशीर्ष कृ. अमावस्या	27 मार्गशीर्ष शु. सप्तमी
शुक्र		07 मार्गशीर्ष कृ. द्वितीया, रोहिणी व्रत	14 मार्गशीर्ष कृ. दशमी, बाल दिवस, नेहरु जयंती	21 मार्गशीर्ष शु. प्रतिपदा	28 मार्गशीर्ष शु. अष्टमी, मासिक दुर्गा अष्टमी
शनि	01 कार्तिक शु. दशमी	08 मार्गशीर्ष कृ. तृतीया, गणाधिप संकष्टी चतुर्थी	15 मार्गशीर्ष कृ. एकादशी, उत्पन्ना एकादशी व्रत	22 मार्गशीर्ष शु. द्वितीया	29 मार्गशीर्ष शु. नवमी
रवि	02 कार्तिक शु. एकादशी, देव उत्थान एकादशी, तुलसी विवाह	09 मार्गशीर्ष कृ. पंचमी	16 मार्गशीर्ष कृ. द्वादशी	23 मार्गशीर्ष शु. तृतीया	30 मार्गशीर्ष शु. दशमी

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

तुलसी जी केवल एक पौधा नहीं, बल्कि देवी तुलसी – भक्ति, समर्पण और शुद्धता की मूर्ति मानी जाती हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, **तुलसी जी पूर्व जन्म में पवित्रा या वृंदा नाम की एक धर्मपरायणा स्त्री थीं, जो दैत्यराज जालंधर की पत्नी थीं।** वृंदा अपने पतिव्रत धर्म के पालन में इतनी दृढ़ थीं कि उनकी शक्ति से जालंधर को भी देवता पराजित नहीं कर पाते थे। भगवान विष्णु ने धर्म की रक्षा हेतु उनके पति का वध करने के लिए वृंदा की तपस्या का भंग किया।

जब वृंदा को यह ज्ञात हुआ, तो उन्होंने भगवान विष्णु को शाप दिया कि वे पत्थर बन जाएँ – और तभी **विष्णु शालिग्राम रूप में परिवर्तित** हो गए। **वृंदा का देहांत होने पर उनके शरीर से तुलसी का पौधा उत्पन्न हुआ।**

तुलसी की सच्ची प्रेम-भक्ति और त्याग से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उन्हें सदा अपने साथ पूजे जाने का आशीर्वाद दिया। उन्होंने तुलसी के पौधे को प्रत्येक घर और आँगन में पूजनीय घोषित किया तथा **अपने शालिग्राम अवतार से तुलसी से विवाह किया।**

माना जाता है कि **सबसे पहले तुलसी और शालिग्राम का विवाह स्वयं भगवान शिव और माता पार्वती ने शिवलोक** में संपन्न कराया था। तभी से **कार्तिक मास की देव-उठावनी एकादशी के दिन तुलसी विवाह की पावन परंपरा प्रारंभ हुई।**

यह दिन भगवान विष्णु के चातुर्मास व्रत की समाप्ति और शुभ कार्यों के आरंभ का प्रतीक है।

हिन्दू धर्म में तुलसी का पौधा अत्यंत पवित्र और शुभ माना गया है। लगभग प्रत्येक हिन्दू घर के आँगन या द्वार पर तुलसी का पौधा लगाया जाता है। यह न केवल आस्था का प्रतीक है, बल्कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यंत लाभकारी है – **तुलसी के पत्ते अनेक रोगों का निवारण करते हैं।**

किसी भी **शुभ कार्य, पूजा या यज्ञ में तुलसी पत्र** का समावेश आवश्यक माना गया है। चरणामृत में तुलसी दल मिलाकर प्रसाद के रूप में ग्रहण करना दिव्यता, पवित्रता और भगवान विष्णु के प्रति समर्पण का प्रतीक है।

पूरा पढ़े www.

देव दीपावली का त्योहार कार्तिक पूर्णिमा के दिन भारतवर्ष में उत्तर प्रदेश के **वाराणसी** (जिसे **काशी और बनारस** के नाम से भी जाना जाता है) में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह विश्व के सबसे प्राचीन नगर काशी की संस्कृति और परंपरा की अनूठी मिसाल है। **यह पर्व दीपावली के पंद्रह दिन बाद आता है।** माना जाता है कि कार्तिक पूर्णिमा के दिन देवता दिवाली मनाने काशी आते हैं, इसलिए पूरी काशी को दीपों की रौशनी से सजाया जाता है। **बनारस में गंगा नदी के घाटों को दीपों से जगमगाया जाता है और इस दिन माँ गंगा तथा भगवान शिव की आराधना की जाती है।**

पौराणिक मान्यता के अनुसार, **दैत्य तारकासुर के तीन पुत्र थे – तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली। इन तीनों को 'त्रिपुरा' कहा जाता था। शिव-पार्वती के पुत्र भगवान कार्तिकेय ने तारकासुर का वध किया था, क्योंकि तारकासुर को ब्रह्मा जी से यह वरदान मिला था कि उसकी मृत्यु केवल शिव के अंश से ही हो सकती है।** अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए तारकासुर के तीनों पुत्रों ने कठोर तपस्या कर ब्रह्मा जी से अमर होने का वरदान माँगा। ब्रह्मा जी ने उन्हें अमरत्व का वरदान देने से मना कर दिया और कहा कि वे कोई अन्य वरदान माँगें। तब त्रिपुरासुर भाइयों ने माँग की कि उनके नाम पर तीन नगर – तीनों दिशाओं में – बनाए जाएँ और उनकी मृत्यु केवल तभी संभव हो जब **अभिजीत नक्षत्र में कोई शांत पुरुष असंभव रथ और असंभव अस्त्र से तीनों को एक ही दिशा में, एक ही वार में नष्ट कर सके।** ब्रह्मा जी ने "तथास्तु" कहकर वरदान दे दिया। इस वरदान के बल पर तीनों दैत्यों ने तीनों लोकों पर अपना अधिकार कर लिया और अत्याचार करने लगे।

उनके अत्याचारों से पीड़ित देवता भगवान महादेव के पास पहुँचे और त्रिपुरासुरों से मुक्ति की प्रार्थना की। **तब भगवान शिव ने विश्वकर्मा से एक दिव्य रथ का निर्माण करवाया, जिसके पहिए सूर्य और चंद्रमा बने। उस दिव्य रथ पर सवार होकर भगवान शिव ने दैत्यों के विरुद्ध युद्ध किया।**
युद्ध के दौरान जब तीनों त्रिपुरा एक ही दिशा में आ गए, तब भगवान शंकर ने एक ही तीर से तीनों का वध कर दिया। कार्तिक पूर्णिमा के दिन भगवान शिव ने इन राक्षसों का संहार किया और संसार को उनके अत्याचारों से मुक्त कराया।

उसी दिन से **भगवान शिव "त्रिपुरारि" और "त्रिपुरांतक"** के नाम से प्रसिद्ध हुए। देवताओं ने इस विजय की प्रसन्नता में स्वर्ग लोक में दीप जलाकर दीपोत्सव मनाया – तभी से कार्तिक पूर्णिमा के दिन देव दीपावली मनाने की परंपरा प्रारंभ हुई। माना जाता है कि आज भी इस दिन भगवान शिव स्वयं पृथ्वी पर पधारते हैं।

पूरा पढ़े www.

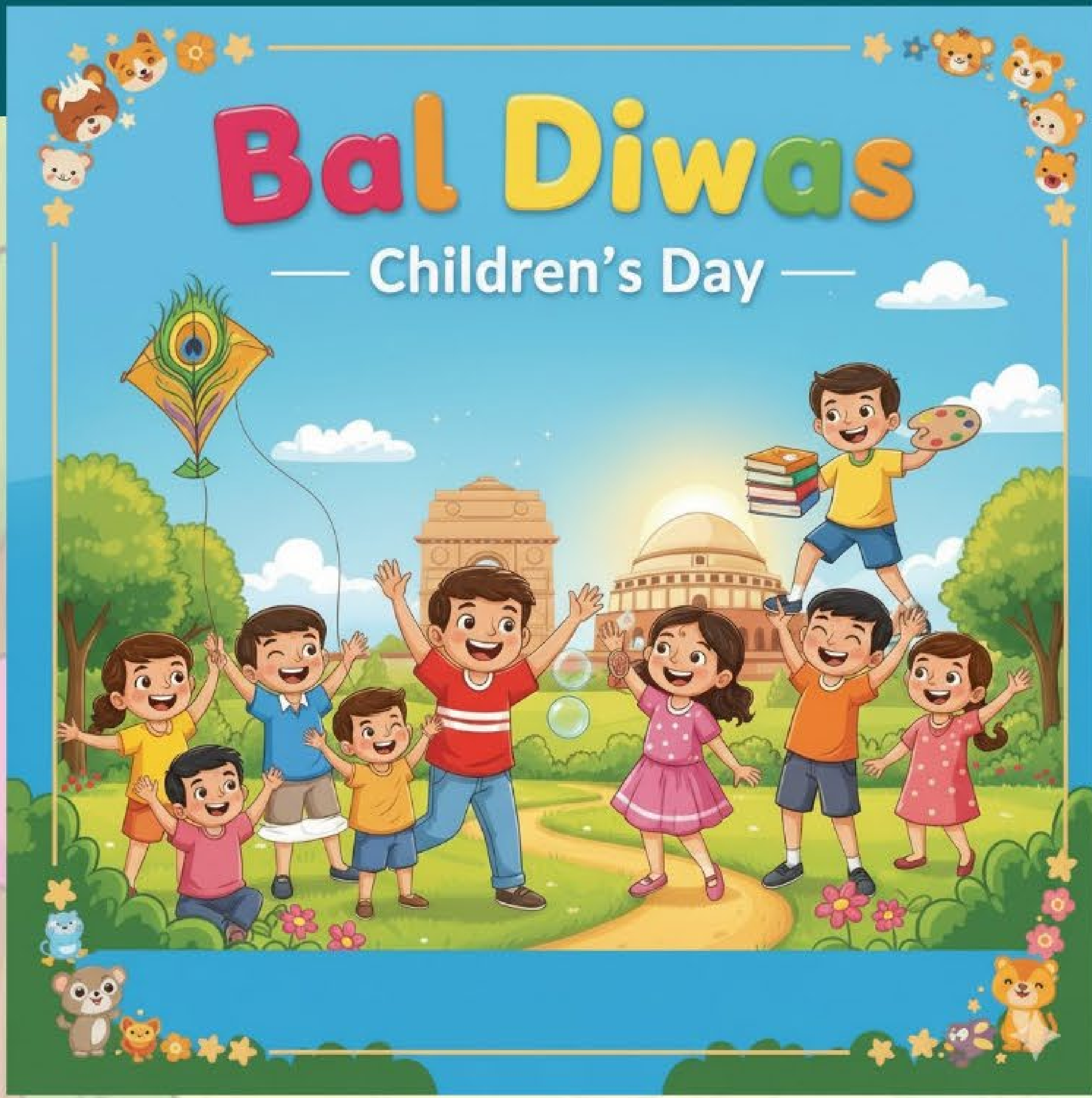

21वीं सदी विज्ञान, तकनीक और वैश्वीकरण की तीव्र गति से बदलती दुनिया की सदी है। **यह वह युग है जिसने मानव सभ्यता के हर क्षेत्र (शिक्षा, संचार, स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और जीवनशैली आदि) को नई परिभाषाएँ दी हैं।** कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सूचना प्रौद्योगिकी, जैव-तकनीक, चिकित्सा तथा कृषि विज्ञान के साथ विज्ञान के परंपरागत एवं आधुनिक विषयों में शोध और नवाचार में हुई प्रगति ने अभूतपूर्व संभावनाओं को जन्म दिया है। किंतु इन्हीं परिवर्तनों के बीच नैतिक मूल्यों का ह्रास, मानसिक असंतुलन, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक असमानता जैसी नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं।

संभावनाओं का नया क्षितिज:

21वीं सदी बाल मन के लिए "संभावनाओं और सपनों की सदी" है। आज की बालक एवं बालिकाएं सीमाओं से परे सोच सकती हैं, क्योंकि ज्ञान अब किसी एक देश, संस्था या पुस्तक तक सीमित नहीं रहा। स्मार्टफोन, इंटरनेट, रोबोटिक्स, वर्चुअल रियलिटी और अंतरिक्ष अनुसंधान बच्चों की जिज्ञासा को नई दिशा देते दिखाई देते हैं। बच्चे अब वैश्विक मंचों पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित कर सकते हैं फिर चाहे वह संगीत हो, कला, विज्ञान, खेल या साहित्य। डिजिटल माध्यमों ने उन्हें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और आत्मविश्वास प्रदान किया है। यह सदी बाल मन को न केवल ज्ञानवान बना सकती है, बल्कि उसमें वैश्विक नागरिकता, सहयोग और मानवीय संवेदना की समझ भी विकसित कर सकती है।

नई चुनौतियों तथा समस्याओं का यथार्थ:

अपार संभावनाओं के साथ अनेक जटिल चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। डिजिटल युग ने ज्ञान के स्रोत तो बढ़ाए हैं, परंतु सूचना की अति ने गहराई और चिंतन की क्षमता को कमजोर किया है। **बच्चे अब ज्ञान अर्जित करने से अधिक सूचना उपभोग करने लगे हैं।**

सोशल मीडिया और गेमिंग प्लेटफॉर्म ने उन्हें 'वर्चुअल समाज' का सदस्य बना दिया है, जहाँ भावनाएँ कृत्रिम हैं और संबंध सतही। **मोबाइल और स्क्रीन पर लंबे समय तक बने रहना बच्चों की नींद, दृष्टि और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है।** ध्यान की अवधि घट रही है, एकाग्रता टूट रही है, और सामाजिक संवाद की क्षमता कम हो रही है। इतना ही नहीं प्रतिस्पर्धा की तीव्रता, अंकों की दौड़ और अभिभावकीय अपेक्षाएँ बच्चों से बचपन को सहजता से छीन रही हैं वहीं शहरी जीवन की असुरक्षा, प्रदूषण और हिंसा का माहौल उनके भीतर भय

और अस्थिरता का डर पैदा कर रहा है। मेरा ऐसा मानना है कि 21वीं सदी की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि तकनीक और प्रगति के बीच बाल मन अपनी मानवीय संवेदना, रचनात्मकता और सरलता को कैसे बचाए रखें तथा समस्याओं से कैसे पार पाएं?

डिजिटल शिक्षा की विडंबना:

डिजिटल शिक्षा ने जहाँ ज्ञान तक पहुँच को आसान बनाया है, वहीं उसने सीखने के अनुभव को एकाकी और यांत्रिक भी बना दिया है। सहयोग, सामूहिकता और संवाद जैसी मानवीय शिक्षण प्रक्रियाएँ धीरे-धीरे हाशिए पर जा रही हैं।शिक्षा अब उपकरणों की दक्षता तक सीमित हो रही है, जबकि आवश्यकता है विवेक की-अर्थात् तकनीक का संयमित उपयोग, स्क्रीन टाइम का नियमन, साइबर सुरक्षा की समझ और नैतिक उपयोग का अभ्यास।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 इस दिशा में एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह तकनीक और मूल्य-आधारित शिक्षा के समन्वय पर बल देती है, किंतु दुर्भाग्य यह है कि अधिकांश राज्यों में इसका प्रभावी क्रियान्वयन अभी स्कूली शिक्षा में बाकी है।

मानवीयता और संवेदना का पुनर्जागरण:

आज जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता 'सोचने' लगी है, तब सबसे बड़ी आवश्यकता है कि मानव 'महसूस' करना न भूले। बाल मन को इस युग में मानवता का वाहक बनना होगा।

उन्हें सत्य, करुणा और सहानुभूति को जीवन का आधार बनाना होगा; प्रकृति और जीव-जंतुओं का सम्मान करना सीखना होगा और अपने भीतर सहयोग और साझेदारी की भावना विकसित करनी होगी। क्योंकि ज्ञान और सृजनशीलता का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि समाज और विश्व की भलाई होना चाहिए। यही दृष्टिकोण बच्चों को सच्चा "**भारतीय नागरिक**" बनाएगा।

परिवार, समाज और विद्यालय की भूमिका:

बाल मन के विकास में तीन प्रमुख आधार हैं-परिवार, समाज और शिक्षण संस्थान। इसमें परिवार को बच्चों में प्रेम, सुरक्षा, अनुशासन और नैतिक दिशा देनी होगी। जबकि समाज उन्हें समान अवसर, सुरक्षित वातावरण और प्रेरक आदर्श माहौल प्रदान कर सकता है और करना भी चाहिए, वहीं शिक्षण संस्थानों को बच्चों में ज्ञान के साथ मूल्य, संवेदना और जिम्मेदारी का बोध कराना होगा ।मेरा ऐसा मानना है कि यदि ये तीनों स्तंभ सामंजस्यपूर्ण रूप से कार्य करें, तो बच्चे न केवल बुद्धिमान और आत्मनिर्भर होंगे, बल्कि संवेदनशील, रचनाशील, नवाचारी और समाज-परिवर्तनशील नागरिक भी बन सकेंगे।

समाधान की दिशा :

बाल मन के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक है कि-बच्चों को प्रकृति के निकट लाया जाए; कला, खेल और पठन-पाठन को जीवन का अंग बनाया जाए;ध्यान, योग और आत्मचिंतन जैसी विधाओं से मानसिक संतुलन सिखाया जाए; शिक्षकों को मार्गदर्शक और प्रेरक की भूमिका में पुनर्स्थापित किया जाए। यदि तकनीक और संस्कार, बुद्धि और भावना, ज्ञान और करुणा का संतुलन बना लिया जाए, तो यह सदी बालकों की सदी सिद्ध होगी-एक ऐसी सदी जहाँ विज्ञान और मानवता साथ-साथ चलें।

निष्कर्ष: 21वीं सदी वास्तव में अवसर और चुनौती-दोनों की सदी है। **यदि हम बाल मन को केवल तकनीकी दक्षता ही नहीं, बल्कि नैतिकता, संवेदना और सह-अस्तित्व की शिक्षा दे पाएँ, तो वे इस सदी को केवल आधुनिक नहीं, बल्कि मानवीय और करुणामय सदी बना देंगे।** यही इस युग का सबसे बड़ा उपहार होगा -एक ऐसी दुनिया जहाँ ज्ञान का उद्देश्य करुणा हो, और करुणा की दिशा ज्ञान से प्रकाशित।

- प्रो. (डॉ.) मनमोहन प्रकाश, शासकीय (आदर्श, स्वशासी) होलकर विज्ञान महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

भारतीय परम्परा की मासिक ई-पत्रिका

नियमित प्राप्त करने हेतु हमें

सम्पर्क करें!

- व्हाट्सएप और टेलीग्राम पर प्रत्येक माह के प्रारम्भ में **ई-पत्रिका का नया अंक** प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक प्राप्त न हुआ हो, तो कृपया हमें सूचित करें।

- ई-पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिए गए **नंबर 7303021123** को अपने मोबाइल में सेव करें और **व्हाट्सएप एवं टेलीग्राम ग्रुप** से जुड़ें।

- पत्रिका में जहाँ भी **सोशल मीडिया आइकॉन** दिए गए हैं, उन पर स्पर्श करने से आप सीधे संबंधित लिंक पर पहुँच सकते हैं।

- यदि ई-पत्रिका में कोई **त्रुटि नज़र आए तो कृपया हमें अवगत कराएँ।** साथ ही, यदि पत्रिका आपको पसंद आए तो इसे अपने **परिवार और मित्रों के साथ साझा करें।**

- भारतीय परंपराओं को संरक्षित रखने एवं पत्रिका को और **अधिक सुरुचिपूर्ण** बनाने के लिए **आपके सुझाव और विचार** हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान हैं।

- आप अपने क्षेत्र/समुदाय में हो रहे **पारंपरिक आयोजन या विशेष लेख** भी हमें भेज सकते हैं, ताकि उन्हें आगामी अंकों में प्रकाशित किया जा सके।

- पत्रिका को और उपयोगी बनाने के लिए **विषय-वस्तु** पर आपके सुझाव **(जैसे – विशेषांक, लोककथाएँ, परंपरागत पर्व या व्यंजन)** हमें अवश्य लिखें।

दर्शन क्या है? अक्सर मैंने देखा है लोग तीर्थ यात्रा पर जाते है किसलिए? भव्य मन्दिर और मूर्तियों को देखने के लिए, ना कि दर्शन के लिए।

अब आप सोच रहे होंगे की देखने और दर्शन करने में क्या अन्तर है ? देखने का मतलब है, सामान्य देखना जो हम दिनभर कुछ ना कुछ देखते रहते हैं। किन्तु दर्शन का अर्थ होता है- **जो हम देख रहे है 'उसके पीछे छुपे तथ्य और सत्य को जानना'। देखने से मनोरंजन हो सकता है, परिवर्तन नहीं।** किन्तु दर्शन से मनोरंजन हो ना हो लेकिन परिवर्तन अवश्यम्भावी है। इसलिये दर्शन वह है-

1] जो आपके **जीवन को बदलने** की प्रेरणा दे।

2] जो आपके **जीवन का कायाकल्प** कर दे।

3] जो आपके **जीवन में आमूल - चूल परिवर्तन** कर दे।

अंग्रेजी में दर्शन का मतलब होता है - **फिलोसोफी, जिसका अर्थ होता है - यथार्थ की परख का दृष्टिकोण।**

रामकृष्ण परमहंस की दक्षिणेश्वर की काली को उनसे पहले और उनके बाद हजारों लोगों ने देखा किन्तु किसी को दर्शन नहीं हुआ। क्यों ? क्योंकि रामकृष्ण परमहंस ने ना केवल काली की मूर्ति को देखा बल्कि उसके दर्शन को समझा इसलिए काली ने रामकृष्ण परमहंस को दर्शन दिया।

भगवान श्री राम के मन्दिर जाकर उनकी मूर्ति के दर्शन करने का मतलब है **उनके जीवन चरित को समझा जाये और उसी के अनुसार अपने जीवन में परिवर्तन किया जाये। यही राम का दर्शन है।** यदि आप राम की मूर्ति तो देखते हैं किन्तु अपने जीवन में कोई परिवर्तन नहीं करते हैं तो फिर आपको राम के दर्शन का कोई लाभ नहीं मिलने वाला।

यदि आप **शिवजी के दर्शन** करने जाते हैं और आपके मन में क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष ही भरा है तो फिर दर्शन का क्या लाभ? इसी तरह यदि आप **हनुमानजी के दर्शन** करने जाते हैं और आपका मन पवित्र नहीं है, स्त्रियों पर आपकी गलत दृष्टि है तो फिर हनुमानजी का दर्शन करना बेकार है।

"भक्त वही सच्चा, जो है अभी बच्चा" जो बड़ा हो गया वो भक्त नहीं हो सकता और जो भक्त हो गया उसमें बड़प्पन नहीं हो सकता।

- गोवर्द्धन दास बिन्नानी जी, "राजा बाबू", बीकानेर (राज.)

मंदिर की घंटियों की मधुर गूंज जब किसी नगर की सुबह का आलोक बन जाती है तो लगता है जैसे मनुष्य ने अपनी आत्मा को ईश्वर से जोड़कर जीवन की पहली सांस ली हो। किन्तु, यही नगर जब **सामूहिक प्रार्थना की गूंज** से भर जाता है और उसी गूंज के बीच किसी **भूखे बच्चे का रुदन, किसी मजदूर की हांफती कराह, या किसी दलित की टूटी हुई पुकार** सुनाई नहीं देती, तब प्रश्न उठता है कि हमारी भक्ति की दिशा क्या केवल पत्थर की मूर्तियों की ओर है या जीवित मनुष्यों की ओर भी मुड़ती है।

भारत का इतिहास ऐसा है कि **हमने वृक्षों में देवत्व खोजा, नदियों को मां कहा, पर्वतों को पूज्य माना, अग्नि और सूर्य को आराध्य स्वीकारा।** यह हमारी संस्कृति का उज्ज्वल पक्ष है। किंतु यही परंपरा जब मानव के भीतर के देवत्व को भूल जाती है तो वह विकृति बन जाती है। इस विडंबना का सबसे तीखा रूप हमें समाज में स्त्रियों की स्थिति देखकर मिलता है। देवी के रूप में पूजित नारी, जब धरती पर बेटी बनकर आती है, तो उसकी कद्र आधी रह जाती है। यह विरोधाभास हमारे ही घर आंगन में पलता है।

मनुष्य की गरिमा का सबसे बड़ा पैमाना यह होना चाहिए कि वह अपने बराबर वाले मनुष्य के प्रति कितना आदर रखता है। परंतु यहाँ तो

- **जाति के नाम पर, लिंग के नाम पर, धन और वंश के नाम पर ऊंच-नीच की दीवारें खड़ी कर दी गई हैं।**
- **पूजा का दीपक मंदिर की देहरी पर तो जलता है, किंतु घर के भीतर बहू की आंखों में अक्सर वही दीपक बुझा-बुझा सा दिखता है।**
- **नदियों के घाट पर हम कलश चढ़ाते हैं, लेकिन उन्हीं नदियों को गंदगी से भरने में कोई संकोच नहीं करते।**
- **पर्वतों को प्रणाम करते हैं और उनके सीने को विस्फोटों से छलनी कर डालते हैं।**
- **प्रकृति से लेकर मनुष्य तक, हम जिसे पूजते हैं उसे ही आहत भी करते हैं।**

ऐसा लगता है मानो हमारे भीतर एक दोहरा व्यक्तित्व बसा हुआ है। एक ओर हम प्रार्थना में गला भर लेते हैं, दूसरी ओर पास बैठे इंसान की पीड़ा को अनसुना कर देते हैं। यह विरोधाभास हमारी सभ्यता की सबसे बड़ी चुनौती है। अगर पूजा केवल अनुष्ठान बनकर रह जाए, और जीवन के आचरण में न उतर पाए, तो उसका अर्थ खो जाता है।

सच्ची भक्ति वही है जिसमें हम **वृक्ष में तो देवत्व** देखें ही, साथ ही उस **छांव में बैठने वाले थके मजदूर की गरिमा भी पहचानें।** नदी को मां कहें तो उसके तट पर **जल पीते बच्चे की प्यास भी मिटाएं। स्त्री को देवी कहें तो उसे मनुष्य के रूप में बराबर हक और सम्मान भी दें।** यही वह **संगति है जिसमें पूजा और व्यवहार एक** हो जाते हैं।

दरअसल, धर्म का सौंदर्य तब प्रकट होता है जब वह मंदिर से निकलकर जीवन की गलियों में उतरे, जब वह आरती के साथ-साथ आचरण में भी झलके। यही हमारे समय की सबसे बड़ी जरूरत है। वरना कहीं ऐसा न हो कि हमारी सभ्यता की ध्वनि केवल घंटियों तक सीमित रह जाए और उसके पार का मौन हमें शर्मसार करता रहे।

- विवेक रंजन श्रीवास्तव जी, भोपाल (म. प्र.)

भारतीय परम्परा™

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा
की माला में पिरोना

चाहते है तो हमें सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट
पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

महोदय,

"क्षमा बड़न को चाहिए" यह कहावत जीवन के गहन अनुभव और परिपक्वता से उपजी सत्यता को प्रकट करती है। क्षमा मांगना और देना केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि आत्मा का शुद्धिकरण है।

जब व्यक्ति अपने अहंकार को त्याग कर झुकता है, तभी सच्ची क्षमा संभव होती है। भारत की विविध संस्कृति में क्षमा का अभ्यास कई त्योहारों और अवसरों पर देखने को मिलता है। **जैन धर्म में पर्यूषण पर्व** का समापन क्षमावाणी दिवस से होता है, जिसमें लोग अपने परिचितों और प्रियजनों से **"मिच्छामि दुक्कड़म्"** कहकर क्षमा मांगते हैं।

इसी प्रकार **दीपावली के बाद दूसरे दिन यानि पड़वा** को भी भाई-बहन और परिवारजन बड़ों के धोक देकर क्षमा याचना करते हैं जिससे रिश्तों में मिठास बनी रहती है।

सिख धर्म में गुरुपर्व और ईद-उल-फितर पर लोग गिले-शिकवे भुलाकर गले मिलते हैं, जो क्षमा और भाईचारे का सुंदर उदाहरण है।

क्रिसमस का पर्व भी **"शांति और मेल-मिलाप"** का संदेश देता है, जहां यीशु मसीह की **शिक्षाओं में क्षमा** को सर्वोच्च धर्म माना गया है।

होली का त्यौहार **भी "बुरा न मानो होली है"** कहकर पुराने विवादों को समाप्त करने और नए सिरे से संबंधों की शुरुआत का अवसर प्रदान करता है।

क्षमा का अभ्यास व्यक्ति को आंतरिक शांति और आत्मिक संतोष प्रदान करता है। यह न केवल व्यक्तिगत संबंधों को प्रगाढ़ करता है, बल्कि समाज में भी सद्भावना और एकता का वातावरण निर्मित करता है। अतः क्षमा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन का वह मूल्य है जो हमें महान और उदार बनाता है।

- अमृतलाल मारू जी, 'रवि', इन्दौर (म.प्र.)

अब कहां आती हैं रोज़ चिठ्ठियां।
एक चिठ्ठी को तरस गईं अंखियां।

किसे रहता है अब - चिठ्ठियों का इंतज़ार।
डाकिया भी अब कहां - खटखटाता है द्वार।

दूरभाष पर रहती हैं अब उंगलियां।
अब कहां आती हैं रोज़ चिठ्ठियां।

पत्र - विधा साहित्य से - आज विदा हो गई।
दूरभाष पर आजकल - नई पीढ़ी फ़िदा हो गई।

उसी पर अब घंटों होती हैं बतियां।
अब कहां आती हैं रोज़ चिठ्ठियां।

जिन्हें पढ़ते हुए कभी - अंखियां भींग जाती थीं।
जिनके न आने से कभी - यादें तड़पा जाती थीं।

रेत - नयन में अब न बहें नदियां।
अब कहां आती हैं रोज़ चिठ्ठियां।

दूरभाष ने कम कर दिया - अब इंतज़ार का मज़ा।
इंतज़ार तो अब लगता है - उन्हें बतौर - ए - सज़ा।

चिठ्ठियां न आईं, आ गईं सर्दियां।
अब कहां आती हैं रोज़ चिठ्ठियां।

किसे फ़ुर्सत है जो लिखे - अब किसी को चिठ्ठियां।
काग़ज़, क़लम न पास में - हैं भावों की शब्दावलियां।

सहन न होय अब उन्हें ये तल्ख़ियां -
अब कहां आती हैं रोज़ चिठ्ठियां।

- अशोक आनन जी, मक्सी, शाजापुर (मध्य प्रदेश)

शीत-लहर का जोर।
जल्दी होती साँझ अब, और देर से भोर॥

कठिन हुआ आवागमन, कुहरा है घनघोर।
शरद-काल में देखिए, बिन सूरज की भोर॥

रद्द रेलगाड़ी हुई, ठंडे पड़े विमान।
ओढ़ रजाई हम पड़े, सोए सब अरमान॥

थर-थर सूरज काँपता, देख पड़ रही शीत।
कैसे गाएँ प्रीति के, अब मनुहारी गीत॥

मफलर, टोपी में सजे, बाबा तापें धूप।
सुड़क-सुड़क कर पी रहे, बैठ धूप में सूप॥

कहीं-कहीं कंबल बँटें, जलते कहीं अलाव।
धनिकों में जगने लगा, सेवा का अब भाव॥

युवा-वर्ग की मौज है, बच्चे बेपरवाह।
ओढ़ रजाई शीत में, बाबा रहे कराह॥

धूप सुहानी गुनगुनी, जैसे प्रिय का प्यार।
चाय सुबह की शरद में, आलिंगन, अभिसार॥

भाँति-भाँति की सब्जियाँ, मिलती हैं इस काल।
गोभी, गाजर, सेम है, मटर, टमाटर लाल॥

अगर घूमने की करो, मन में कोई चाह।
शरद-काल में लो पकड़, सागर-तट की राह॥

- मामचंद अग्रवाल जी, जमशेदपुर (झारखण्ड)

वैदिक वाङ्मय में मनुष्य को प्रशस्त्य जीवन शैली के लक्ष्यगत कुवृत्तियों/ बुराइयों से सतर्क रहने के लिए निर्देशित किया गया। श्रेय मार्ग का उल्लेख व्यष्टि ही नहीं समष्टि स्तर पर भी अभ्युदयकारी दिशा व गति प्रदर्शित करता है। **वर्तमान युग में विकृत हो रही सामाजिक स्थितियों, यत्र- तत्र व्याप्त हो रहे भ्रष्टाचरण, क्षीण हो रहे जीवन मूल्यों, बिखर रही परिवार व्यवस्था, भौतिक पदार्थों में संलिप्तता, कर्म तत्व से तटस्थता** आदि को देखकर श्रेय मार्ग की महत्ता को गम्भीरतापूर्वक संज्ञान में लेने की आवश्यकता अनुभूत हो रही है। व्यवस्थित व्यक्तित्व तथा सुसंगठित समाज के लिए मानवीय सदवृत्तियों को केंद्रित करना अपरिहार्य दिखाई दे रहा है।

बहुधा मनुष्य संसार यात्रा में अनेक नकारात्मक मनोभावों का सामना करता है, जो जीवन को कुमार्ग पर संचालित कर सकते हैं। ध्यातव्य है कि ये **आन्तरिक शत्रु विवेक- शक्ति को क्षीण कर अभीष्ट लक्ष्य की पूर्ति** में अवरोधक बन सकते हैं। इतना ही नहीं, इन आंतरिक शत्रुओं द्वारा वशीकृत होने पर जीवन की सार्थकता चिह्नित हो सकती है। अतएव मनुष्य को सद्वृत्तियों के संदर्भ में सजग और सचेत रहना चाहिए। इस संदर्भ में **अथर्ववेदीय मंत्र है कि-**
उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र।। अथर्ववेद/8/4/22

उल्लू को दिवांध अथवा दिवाभीत कहा गया है। उलूक अंधकार प्रिय पक्षी है, अंधेरे में सक्रियता उसकी प्रकृति है। उक्त मंत्र के अंतर्गत "उलूक यातुं जहि" इन शब्दों में मनुष्य को अंधकार वृत्ति से पृथक्ता निर्देशित है। अंधकार अज्ञान का प्रतीक है। अज्ञान में लिप्तता मानव के हित में नहीं। समाज को सुधार की ओर- श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करने वाला यह प्रशिक्षण सदा ग्रह्णीय है। कल्याणेच्छु व्यक्ति द्वारा स्वार्थ अथवा मोह के पाश से बांधने वाली इस पाशविक वृत्ति/ अंधकारप्रियता से विरत होना लोकाभ्युदयकारी है।

दरअसल अज्ञान से आच्छादित होने पर मनुष्य का अंतःकरण विवेकशून्य हो जाता है। अज्ञानता की स्थिति में मानवीय गुणों का नाश होने लगता है, अधर्म अविवेक आदि अवगुण विस्तार पाते हैं। अतएव विकृत वृत्तियों से अलग रहना ही मानवीय पक्ष है। सर्वश्रेष्ठ योनि होने के नाते मनुष्य से प्रकाश की ओर गतिमान होने की अपेक्षा की जाती है। निस्संदेह, मनुष्य के

लिए उल्लू के समान कार्य करने की प्रवृत्ति से दूरी बनाना ही युक्तियुक्त है। इस उपदेश के पीछे लोकमंगल की तीव्र व्यंजना दिखाई देती है।

यथार्थ दर्शन ही ज्ञान है- यथार्थदर्शनं ज्ञानम्। जीवन में अर्थवत्ता की दृष्टि से ज्ञान को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है- नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। प्रकाश ज्ञान का प्रतीक है। ज्ञानाधिगम के लिए अभीप्सा जरूरी है, ज्ञानी जनों का सान्निध्य जरूरी है, सजगता जरूरी है। जीवन की सफलता- सार्थकता- उत्कृष्टता की प्राप्ति में यही तत्व सर्वाधिक सहायक है। ज्ञान ही जीवन में गुणवत्ता का समावेश करता है। उपनिषद् ग्रंथ मानव को ज्ञान की ओर बढ़ने के लिए उपदिष्ट करते हैं- **उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत। कठोपनिषद्/3/14**

ज्ञान से चरित्र का निर्माण होता है। यह जीवन में सतत प्रयोग में आने वाला तत्व है, यही जीवन को सही दिशा में गतिशीलता की ओर प्रेरित करता है।
ज्ञान शुद्ध वायु की तरह जीवन में आवश्यक दिखाई देता है। इसके बिना तो जीवन की सार्थकता ही प्रश्नांकित है। ज्ञान में बौद्धिक विकास का सामर्थ्य है जो जीवन को अर्थवान बनाने में सहायता कर सकता है। जीवन को संतुलित व साभिप्राय बनाने के लिए ज्ञान की अपरिहार्यता सर्वज्ञात तथ्य है। ज्ञान ही वह तत्व है जो वैयक्तिक/ सामाजिक संस्थिति के लिए आवश्यक है। इसीलिए अज्ञान से ज्ञान की ओर गतिशीलता हेतु वैदिक प्रार्थना है कि- **तमसो मा ज्योतिर्गमय।** भारतीय चिंतना ज्ञान के अनुसंधान/ अन्वेषण में समर्पित दिखाई देती है।

वैयक्तिक/ सामाजिक उत्कृष्टता के मूल में ज्ञान की प्रभावी संस्थिति है। ज्ञान एक अंतर्दृष्टि है, इसके आलोक में मनुष्य गलत दिशा में कभी नहीं भटकता। **ग्राह्य- त्याज्य, धर्म- अधर्म, कर्तव्य- अकर्तव्य, अच्छा- बुरा के मध्य भेद को संज्ञान** में लेकर उपयुक्त निर्णय के लिए प्रेरित करता है। सोचने समझने की क्षमता में अभिवृद्धि कर यह जीवन में गुणवत्ता का समावेश करता है। समाज में नैतिकता के तहत प्रभावपूर्ण भूमिका है ज्ञान की। व्यक्तिगत एवं समाजगत श्रेष्ठता का आधार 'ज्ञान' मानसिक विकृतियों से सचेत कर परिवेश को बेहतरी की ओर बढ़ाता है।

ज्ञान कौशल को बढ़ावा देता है। यह सुविचारों के माध्यम से वैयक्तिक उन्नति का पथ निर्मित करता है। यही नहीं, जीवन को संयमित और मर्यादित बनाने में भी कार्य करता है। आचार एवं व्यवहार पक्ष को संतुलित व अनुशासित कर यथेष्ट व्यक्तित्व को रूपायित करता है। ज्ञान के माध्यम से ही **सदुद्देश्य तक पहुंचने में सहजता** अनुभव की जाती है। यह मानव को जीवन की सार्थकता एवं सफलता हेतु प्रेरित करता है।

ज्ञान- शक्ति का उपयोग जीवन को सोद्देश्य बनाना सुनिश्चित करता है। **ज्ञान अर्थात् जाग्रति।** ज्ञान से प्रेरित अंतर्निहित मूल्य ही जागरूकता के कारक हैं। प्रगति के निहितार्थ मानव मूल्यों की संचेतना आवश्यक दिखाई देती है। यह जागरूकता व्यक्ति एवं समाज को प्रबुद्ध एवं गतिमान करती है। साथ ही, नीतिगत तत्वों को विस्तारित कर अच्छाई की ओर अग्रसारित करती है। **कुप्रथाओं, अनैतिक विचारों, गलत मान्यताओं** के प्रति हीन दृष्टिकोण निर्मित कर वैचारिक समृद्धि का कारक बनती है। **ज्ञान समाज को स्वस्थ, सकारात्मक तथा आशावादी बनाकर उसमें जीवंतता का संचार करता है।** सुख- शांति का अधिगम करने की दृष्टि से भी यह अतीव प्रभावकारी अनुभूत होता है। **अतः ज्ञान की सर्वत्र उपादेयता सर्वज्ञात बिंदु है।**

ज्ञानार्जन एक सांस्कृतिक अवधारणा है। सभ्यता के विकास में ज्ञान का सर्वाधिक योगदान रहा है। ज्ञान के प्रभाव में सद्भाव, समरसता, समावेश जैसे सद्गुण पनप सकते हैं। ज्ञान परिवेश में सामंजस्य स्थापित करने में भी सहायता कर सकता है। ज्ञानालोक में पारस्परिक सौहार्द एवं सर्व समायोजन का संवर्द्धन हो सकता है। यह दृष्टिकोण को व्यापक बनाकर समावेशी वातावरण को बढ़ावा दे सकता है। इसमें व्यवधानों से जूझने की क्षमता होती है। यही वैयक्तिक/ सामाजिक स्तर पर जटिल संदर्भों का समाधान देता है। प्रकाश ही विसंगतियों को निराकृत करने एवं उज्ज्वल भविष्य का सृजन करने की दिशा में आशान्वित करता है। **ज्ञान में सामाजिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने की योग्यता है।**

ज्ञान- प्रकाश के सुप्रभाव में मानवीय गुण पल्लवित होते हैं। फलतः जीवन को प्रकाशमय बनाने के लिए उपदिष्ट किया गया कि-

तन्तुं तन्विहि रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।। ऋग्वेद/10/53/6

उक्त मंत्र में '**भानुमन्विहि**' **अर्थात्** '**सूर्य का अनुगमन करो**' यह प्रेरणा दी गई। सूर्य अंधकार का समूल उच्छेदन कर सकल जगत को नव प्रकाश- नव चेतना को भर देता है। सूर्य का प्रकाश मन- मस्तिष्क को ऊर्जावान बनाता है। **सूर्य ज्योतिपुंज है।** वस्तुतः जीवन ज्योति है। मरण अंधकार है। सूर्य मनुष्य को अनुप्राणित करता है कि अंधकार को छोड़कर प्रकाश की ओर बढ़ो। ज्ञान से चरित्र का निर्माण होता है। जीवन को सार्थकता से लाभान्वित कराने वाले इस तत्व का सतत और सर्वत्र प्रयोग वांछित है। इसमें कोई संदेह नहीं कि **जीवन पर्यंत ज्ञान की उपादेयता** होती है। स्मरणीय है कि इसके अभाव में जीवन अर्थहीन हो सकता है। कहा भी गया है कि **तस्कर द्वारा रत्नों** की तरह ही **शरीरस्थ कामादि विकारों** द्वारा ज्ञान का हरण हो सकता है। अतएव इस गहन विषय के प्रति सजगता अतीव आवश्यक है-

कामः क्रोधश्च लोभश्च देहे तिष्ठन्ति तस्कराः। ज्ञानरत्नापहाराय तस्माज्जाग्रत जाग्रत॥

प्रकाश जाग्रति का प्रतिनिधित्व करता है। प्रकाश में सब कुछ स्पष्ट दिखता है। यहां लेशमात्र भ्रम नहीं होता। संशय का कोई स्थान नहीं होता। यह वस्तुओं की बोधगम्यता को सहज और संभव बनाता है। यही नहीं, अंधकार जनित चुनौतियों से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह समाज- सौंदर्य के मूलभूत तत्वों के संदर्भ में सजग बनाता है, मानवीय गुणों के ह्रास से सावधान करता है।

अंधकार मोह अथवा अज्ञान का प्रतीक है। अंधकार के कारण दर्शन शक्ति क्षीण हो जाती है। दर्शन शक्ति की क्षीणता के कारण दोष दर्शन संभव नहीं हो पाता। ऐसे में, ज्ञान का बाधित होना अस्वाभाविक नहीं। अंधकार निराशा- अवसाद को भी व्यंजित करता है। जीवन अंधकार में निष्प्राण और निष्पन्द अनुभव करता है। अंधकार अर्थात् अज्ञान मनस् तत्व को भ्रमित करता है, निर्मलता को प्रभावित करता है। अंधकार के अस्तित्व को अन्याय और अनीति से भी जोड़कर देखा जाता है। अंधकार कालुष्य को भी दर्शाता है। यह विसंगतियों से घिरे लोगों के प्रति संवेदनहीनता की ओर इंगित करता है।

अंधकार को परास्त कर तथा ज्ञान से प्रकाशित कर जीवन को नगण्य होने से बचाया जा सकता है। यही शिक्षा जीवन की अर्थवत्ता में कार्य करती है। अज्ञान, अहंकार आदि विकृतियों से अंधकारित जनजीवन को आलोकित करने की प्रेरणा है यहां। निस्संदेह, अज्ञान को निरस्त कर सुख- शांति और संतोष की सुखद परिणति संभव है।

जीवनदायिनी उषा तम को विनष्ट कर प्रकाशोद्गम से गतिशीलता के लिए प्रेरित करती है। यहां तमस् का कोई स्थान नहीं, निराशा का कोई भाव नहीं। यही जीवन का नव प्रभात है। ज्योति का सुखद तथा पावन संस्पर्श पाकर जीव नव चैतन्य से कृतार्थ होता है। उठो, अंधकार नष्ट हो रहा है। प्रकाश फैल रहा है। उषा ने सूर्य के भ्रमण के लिए मार्ग खोल दिया है-
उदीर्ध्वं जीवो असुर्न आगादय प्रागात्तम आ ज्योतिरेति।
आरैक्पन्थां यातवे सूर्यायागन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः॥ ऋग्वेद/1/113/16

जैसे सूर्योदय से अंधकार नष्ट हो जाता है वैसे ही ब्रह्मज्ञान के प्राप्त हो जाने पर समस्त दुःख नष्ट हो जाते हैं। अज्ञान का अंधेरा दूर होने पर ही आध्यात्मिक ज्ञान का प्रकाश विस्तारित हो सकता है। इस तथ्य के दृष्टिगत जागतिक व्यामोह से संलिप्त व्यक्ति को अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया। **ज्योति वृणीत तमसो विजानन्।ऋग्वेद/3/39/7**

अज्ञान नामरूपात्मक जगत् और सुख-दुःखरूप प्रपंच को उत्पन्न करता है। वस्तुतः अन्तःज्योति ही सर्वव्यापी शक्ति को यथार्थतः जानने समझने का माध्यम बनती है। ज्ञान ही सर्वोच्च तत्व के स्वरूप को प्रकाशित करता है। अज्ञान का विनाश होने पर ही बुद्धि से परे परम तत्व का साक्षात्कार किया जा सकता है- **ज्योतिषा बाधते तमः। यजुर्वेद/33/92**

सद्वृत्तियों के माध्यम से वैयक्तिक/ सामाजिक अभ्युत्थान को केंद्रित करने का भी दूरदर्शी ध्येय है। कुत्सित विचारों- कृत्यों के परित्याग तथा मानवोचित आचरण को मान्यता देने के पीछे अनुशासित परिवेश के सृजन का उच्चतम लक्ष्य दिखाई देता है। सत्य की स्वानुभूति ही ज्ञान है। यह आत्म जागरण ही पारमार्थिक यात्रा को साभिप्राय बनाता है। इस दृष्टि से इस जगत रूप रात्रि में योगी लोग जागते हैं। जो परमार्थी हैं- भोग विलास से मुक्त हैं, वे प्रपंच अर्थात् मायिक जगत् से छूटे हुए हैं-

जानिअ तबहिं जीव जग जागा,
जब सब बिषय बिलास बिरागा।।(रामचरितमानस/अयोध्या काण्ड/2)

एतदर्थ वैदिक संदेश है कि अज्ञान रूपी अंधकार का नाश कर ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर बढ़ो- **आरोह तमसो ज्योतिः।**

अंधकार बुद्धि- विवेक पर आवरण डाल देता है। जीवन में शांति और पूर्णता की प्राप्ति के लिए मोह अथवा भ्रम को दूर करना आवश्यक है। आत्मानुशासन, आत्म जाग्रति व आध्यात्मिक उन्नति द्वारा आत्मोन्नति में अवरोध डालने वाले तत्वों से स्वयं को दूर रखना उचित है। निष्कर्षतः **मनुष्य द्वारा सद्ज्ञान तथा सत्संकल्प से मनोविकृतियों को नष्ट कर श्रेय मार्ग पर चलते हुए लक्ष्य सिद्धि के लिए प्रयत्नशीलता अपेक्षित है।** ज्ञान सतत और सर्वत्र लोकहित में कार्य करता है, इस तथ्य के लक्ष्यगत वैदिक साहित्य ज्ञान- पथ निर्दिष्ट करता है।

- प्रो. कनक रानी जी, शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका के पुराने सभी अंकों को देखने के लिए किताब के आइकन पर स्पर्श करें !!

तीनों मौसम में जबरदस्त
टक्कर चल रही है...
सर्दी आ नहीं रही है और गर्मी
जा नहीं रही है..
और बारिश बीच में टांग अड़ा
रही है..!

अपने बारे में कभी बुरा नहीं
सोचना चाहिए
उसके लिए भगवान ने पडोसी
और रिश्तेदार बनाये हैं...!

बेखयाली में मन कुछ यूं
बावला हो जाता है
जैसे चाय पत्ती की मोहब्बत
में सफेद दूध सांवला हो
जाता है..!

DIETING TIP
ऐसी चीजों से दूर रहे जो आपको
मोटा बनाती
जैसे कि वजन तौलने की
मशीन, शीशा, तस्वीरें पतले
दोस्त....!

चार लोग क्या कहेंगे ?
चार लोग यही कहेंगे कि तुम
बेवकूफ थे, जो पूरी जिंदगी
हमारे बारे में सोच कर गुजार
दी....!

एक डॉक्टर के क्लीनिक में
लिखी हुई एक बेहतरीन
लाइन- दवाई में कुछ भी मजा
नहीं है और मजे जैसी कोई
दवाई नहीं है....!

🍯 ठंड के मौसम में गरमा-गरम जलेबी का स्वाद!

सर्द हवाओं में जब रजाई की गर्माहट सुकून देती है, तब अगर थाली में गरमागरम जलेबी हो – तो बात ही कुछ और होती है! आइए जानें घर पर परफेक्ट कुरकुरी और रसदार जलेबी बनाने की आसान विधि।

आवश्यक सामग्री:

मैदा – 1 कप, दही – ½ कप, बेकिंग पाउडर – ¼ चम्मच, इलायची पाउडर – ¼ चम्मच, केसर – ¼ चम्मच, चीनी – ½ कप, पानी – 1 कप, तेल – तलने के लिए

चाशनी के लिए:

चीनी – 1 कप, पानी – 1 कप, इलायची पाउडर – ¼ चम्मच, केसर – ¼ चम्मच

विधि:

- एक बड़े बाउल में मैदा, दही, बेकिंग पाउडर, इलायची पाउडर और केसर मिलाएँ।
- धीरे-धीरे पानी डालते हुए गाढ़ा और चिकना घोल तैयार करें।
- घोल को ढककर 2–3 घंटे के लिए रख दें, ताकि वह हल्का फर्मेंट हो जाए।
- एक कढ़ाई में तेल गरम करें। जलेबी बनाने के लिए पाइपिंग बैग या प्लास्टिक की थैली में घोल भरें।
- गरम तेल में जलेबियाँ गोल-गोल डालें और सुनहरी होने तक तलें।
- अब चाशनी तैयार करें – पैन में चीनी, पानी, इलायची पाउडर और केसर डालकर उबालें जब तक वह हल्की तार की हो जाए।
- तली हुई जलेबियाँ गर्म चाशनी में 1–2 मिनट तक डुबोएँ, फिर निकालें।
- गरमा-गरम परोसें और आनंद लें!

टिप्स:

- जलेबी तलते समय तेल मध्यम आंच पर होना चाहिए – बहुत गरम या बहुत ठंडा नहीं।
- चाशनी गुनगुनी होनी चाहिए, ज्यादा ठंडी नहीं।
- सजावट के लिए ऊपर से कटा हुआ पिस्ता या बादाम डालें – स्वाद और लुक दोनों बढ़ेंगे।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

124. सुग्रीव और बाली के बीच वैर क्यों उत्पन्न हुआ?

उत्तर: यह वैर आपसी गलतफहमी के कारण उत्पन्न हुआ। एक बार मयदानव के पुत्र और दुंदुभि दानव के बड़े भाई मायावी दानव ने बाली को आधी रात के समय द्वंद्व-युद्ध के लिए ललकारा। अपने भाई की सुरक्षा हेतु सुग्रीव भी बाली के साथ हो लिया। दोनों भाइयों को साथ देखकर मायावी दानव भयभीत होकर एक गहरी गुफा में चला गया। उस का वध करने के लिए बाली भी उसके पीछे-पीछे गुफा में प्रवेश कर गया। जाने से पहले उसने सुग्रीव से कहा – **"दानव को मारकर, मेरे लौटने तक गुफा के द्वार पर ही रहना।"** एक माह बीत जाने के बाद, गुफा से बहता रक्त देखकर और बाली की कोई आवाज़ न सुनकर सुग्रीव ने समझा कि बाली मारा गया है। उसने एक बड़े पत्थर से गुफा का द्वार बंद कर दिया और नगर लौट आया। मंत्रियों ने सुग्रीव का राजा के रूप में अभिषेक कर दिया। वास्तव में, वध बाली का नहीं, बल्कि मायावी दानव का हुआ था। जब बाली विजयी होकर लौटकर आया और सुग्रीव को राजा के पद पर देखा, तो उसे यह भ्रम हो गया कि सुग्रीव ने विश्वासघात किया है – उसने जानबूझकर गुफा का द्वार पत्थर से बंद कर मुझे मारने की योजना बनाई।

क्रोधवश बाली ने सुग्रीव को देश से निकाल दिया और उसकी पत्नी को छीन लिया।

125. भगवान श्रीराम द्वारा बाली-वध का आश्वासन देने के बाद भी सुग्रीव को विश्वास क्यों नहीं हुआ कि वे बाली का वध कर पाएंगे?

उत्तर: बाली के अद्भुत बल और पराक्रम को देखकर। बाली खेल-खेल में पर्वतों के शिखरों को उछाल देता, समुद्र को लांघ जाता, बलशाली वृक्षों को उखाड़ देता और अनेक पराक्रमी दानवों का वध कर चुका था। साथ ही, वह अब तक किसी भी युद्ध में पराजित नहीं हुआ था।

126. बाली को इंद्र से क्या वरदान प्राप्त था?

उत्तर: देवराज इंद्र ने बाली को एक सुवर्णमाला प्रदान की थी। इस माला को पहनने पर बाली को अपने प्रतिद्वंदी का आधा बल प्राप्त हो जाता था। इसलिए, बाली को आमने-सामने युद्ध में हराना असंभव था।

127. सुग्रीव ने भगवान श्रीराम के पराक्रम की परीक्षा कैसे ली?

उत्तर: सुग्रीव ने कहा – "यदि आप इन सात साल वृक्षों को एक ही बाण से भेद दें और महिषरूपधारी दुंदुभि, जिसका वध बाली ने किया था, की हड्डियों के पर्वताकार ढेर को एक पैर से बलपूर्वक दो सौ धनुष दूरी तक फेंक सकें, तो मैं मान लूंगा कि आप बाली का वध करने में समर्थ हैं।"

128. भगवान श्रीराम ने सुग्रीव की जिज्ञासाओं को कैसे शांत किया?
उत्तर: भगवान श्रीराम ने केवल अपने पैर के अंगूठे से दुंदुभि दानव की हड्डियों के ढेर को दस योजन दूर फेंक दिया। तत्पश्चात उन्होंने धनुष की टंकार से सम्पूर्ण दिशाओं को गुंजा दिया और अपने बाण से सातों साल वृक्षों को एक साथ भेद दिया। वह बाण पर्वत तथा पृथ्वी के सातों तलों को छेदता हुआ पाताल लोक में चला गया।

129. बाली के साथ पहले द्वंद्व युद्ध में सुग्रीव पराजित क्यों हुआ?
उत्तर: क्योंकि भगवान श्रीराम ने बाली का वध करने हेतु कोई तीर नहीं चलाया। दोनों भाइयों की वेशभूषा, कद-काठी और चाल-ढाल एक समान थी, इसलिए यह पहचानना कठिन हो गया कि उनमें से बाली कौन है और सुग्रीव कौन। इस भ्रम के कारण श्रीराम ने बाण नहीं चलाया और सुग्रीव पराजित हो गया।

130. फिर भगवान श्रीराम ने क्या उपाय निकाला?
उत्तर: पहचान के लिए उन्होंने सुग्रीव के गले में गजपुष्पी लता पहना दी।

131. बाण से घायल होकर बाली ने भगवान श्रीराम से क्या कहा?
उत्तर: "रणभूमि में मुझे अधमपूर्वक मारा गया है।"

132. भगवान श्रीराम ने क्या प्रत्यूत्तर दिया?
उत्तर: "तुम पापाचारी हो। जो पुरुष अपनी कन्या, बहन अथवा छोटे भाई की पत्नी के पास कामबुद्धि से जाता है, वह पापाचारी है। उसका वध करना ही उसके लिए उपयुक्त दंड है। इसके अतिरिक्त, क्षत्रिय के लिए मृगया (शिकार) में कोई दोष नहीं होता।
तुम मुझसे युद्ध करते या न करते, इसमें कोई अंतर नहीं आता – क्योंकि तुम शाखामृग हो, और क्षत्रिय होने के नाते मुझे मृगया का अधिकार है।"

क्रमशः... (अगले माह),

– **माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)**

भारतीय संस्कृति में नारी को '**शक्ति**' कहा गया है। वह सृजन की स्रोत, प्रेम की प्रतीक और संतुलन की संवाहिका है। यदि कहा जाए कि परिवार नामक संस्था की धुरी नारी ही है, तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। नारी न केवल जीवन को जन्म देती है, बल्कि उसे दिशा, अनुशासन और संवेदना भी प्रदान करती है। परिवार का आधार प्रेम, सहयोग, त्याग, अनुशासन और समझदारी पर टिका होता है– और ये सभी गुण नारी के स्वभाव में सहज रूप से विद्यमान होते हैं। इसी कारण से वह परिवार की कुशल प्रबंधक कही जाती है।

परिवार : समाज की इकाई और नारी की भूमिका

परिवार समाज की सबसे छोटी और सबसे प्रभावशाली इकाई है। यदि परिवार सुसंगठित, संतुलित और संस्कारित है तो समाज स्वतः स्वस्थ बनता है। इस परिवार का संचालन, समन्वय और प्रबंधन जिस संवेदनशीलता और दूरदृष्टि से होता है, वह मुख्यतः नारी के ही माध्यम से संभव है।

नारी परिवार में केवल गृहिणी नहीं होती – वह माता, बहन, पत्नी, पुत्री, सास, दादी, शिक्षक, चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक और सदाचारिणी – सभी भूमिकाओं का निर्वाह करती है। वह अपने प्रेम, धैर्य, और दूरदृष्टि से परिवार को एक सूत्र में बाँधती है।

भारतीय परंपरा में नारी की प्रबंधकीय भूमिका

भारतीय संस्कृति में नारी की प्रबंधक छवि प्राचीन काल से पूजनीय रही है। वैदिक युग की '**गृहपत्नी**' केवल रसोई संभालने वाली नहीं, अपितु परिवार की '**संस्कृति-संरक्षिका**' थी। '**मनुस्मृति**' में कहा गया है – **"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।"**
– **जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता भी निवास करते हैं।**

गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, लोपामुद्रा जैसी ऋषिकाएँ न केवल विदुषी थीं, अपितु जीवन के व्यावहारिक पक्षों में भी दक्ष प्रबंधक थीं। वे परिवार और समाज के बीच संतुलन बनाए रखने में समर्थ थीं।

मध्यकालीन भारत में मीरा, अहिल्याबाई होलकर, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, सावित्रीबाई फुले आदि ने नारी के नेतृत्व और संगठनात्मक क्षमता का परिचय दिया। अहिल्याबाई

होलकर ने तो एक **पूरे राज्य को मातृवत् संभाला और प्रबंधन** का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया जो आज भी प्रशंसनीय है।

नारी की प्रबंधकीय योग्यता : भावनात्मक और व्यावहारिक पक्ष

परिवार का प्रबंधन केवल आर्थिक नहीं होता; यह भावनात्मक और मानसिक संतुलन का भी विषय है। नारी दोनों स्तरों पर सक्षम प्रबंधक सिद्ध होती है।

(क) भावनात्मक प्रबंधन :

नारी परिवार के प्रत्येक सदस्य की भावनाओं को समझती है। वह पति की थकान को मुस्कान से मिटाती है, बच्चों की जिद को प्रेम से दिशा देती है, और बुजुर्गों की आवश्यकताओं का ध्यान रखती है। उसकी संवेदना ही परिवार को जोड़ती है।

"स्त्री का हृदय परिवार का आश्रय होता है – जहाँ हर मन को विश्राम मिलता है।"

(ख) आर्थिक प्रबंधन :

नारी सीमित संसाधनों में भी अद्भुत संतुलन बनाती है। वह आय और व्यय का नियोजन करती है, बचत का अभ्यास कराती है, और आवश्यकतानुसार प्राथमिकताएँ तय करती है। वह पारिवारिक अर्थव्यवस्था की **'गृह मंत्री'** होती है।

(ग) समय और श्रम प्रबंधन :

एक कुशल नारी समय का उत्कृष्ट नियोजन करती है। वह सुबह से रात तक अनेक कार्यों का संचालन करती है – बच्चों की देखभाल, भोजन की व्यवस्था, सफाई, कार्यालय (यदि कार्यरत है) और समाजसेवा – यह सब वह बिना शिकायत के निभाती है।

(घ) संवाद और संबंध प्रबंधन :

परिवार में संवाद और सौहार्द्र बनाए रखना सबसे बड़ी कला है। नारी यह जानती है कि कब मौन रहना है, कब मुस्कराना है, और कब समझाना है। यही उसकी सबसे बड़ी प्रबंधकीय बुद्धिमत्ता है।

शिक्षा और संस्कार – नारी के प्रबंधन के मूल स्तंभ

नारी परिवार की पहली शिक्षक है। बालक जब बोलना सीखता है, तो माँ से ही पहला शब्द सीखता है। संस्कारों का बीजारोपण भी माँ के ही माध्यम से होता है। नारी परिवार में **'संस्कार-प्रबंधक'** के रूप में कार्य करती है।

“माँ की गोद ही बच्चे का पहला विद्यालय है।”
यदि माँ संस्कारित है, तो परिवार सुसंस्कृत होता है; और यदि परिवार संस्कारित है, तो समाज स्वयं व्यवस्थित हो जाता है। इसीलिए कहा गया है –
“एक शिक्षिता नारी सौ शिक्षित पुरुषों के समान होती है।”

आधुनिक युग में नारी की प्रबंधकीय चुनौतियाँ

आज की नारी केवल गृहिणी नहीं, अपितु कार्यरत महिला, नेत्री, उद्यमी, शिक्षिका और सामाजिक कार्यकर्ता भी है। वह घर और बाहर दोनों मोर्चों पर संतुलन बनाए रखने का प्रयास कर रही है। किन्तु आधुनिकता के दबाव, प्रतिस्पर्धा और पारिवारिक मूल्यों के क्षरण ने उसके प्रबंधन को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। नौकरी और गृहकार्य के बीच समन्वय कठिन होता जा रहा है। फिर भी भारतीय नारी अपनी जिजीविषा, लचीलापन और भावनात्मक शक्ति से इन चुनौतियों पर विजय पा रही है।
वह तकनीक, शिक्षा और आत्मनिर्भरता के सहारे अपनी भूमिका को और अधिक प्रभावी बना रही है। **“होम मैनेजमेंट”** का जो सिद्धांत आज पश्चिम में प्रचलित है, वह भारतीय नारी का शाश्वत व्यवहार रहा है।

नारी की प्रबंधकीय भूमिका के सामाजिक प्रभाव

एक सुसंगठित परिवार समाज की सुदृढ़ इकाई है। नारी जब अपने परिवार का प्रबंधन सुसंस्कृत ढंग से करती है, तो समाज में अनुशासन, नैतिकता और सहयोग की भावना स्वतः विकसित होती है।

- ❖ **सद्भावना का विकास:** नारी अपने व्यवहार से परिवार में आपसी प्रेम और सहयोग को जन्म देती है।
- ❖ **सांस्कृतिक निरंतरता:** वह परंपरा और आधुनिकता का संतुलन बनाए रखती है।
- ❖ **आर्थिक स्थिरता:** अपने बचत और नियोजन कौशल से परिवार को आर्थिक संकट से उबारती है।
- ❖ **शिक्षा और स्वास्थ्य:** वह बच्चों की शिक्षा, बुजुर्गों की देखभाल और परिवार के स्वास्थ्य पर ध्यान देती है।
- ❖ **नैतिकता का संरक्षण:** नारी अपने जीवन से यह सिखाती है कि सत्य, ईमानदारी और करुणा ही जीवन के वास्तविक मूल्य हैं।

इस प्रकार नारी न केवल परिवार की, अपितु समाज और राष्ट्र की भी कुशल प्रबंधक बन जाती है।

भारतीय समाज में बदलती नारी छवि

आज की नारी घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं है। वह समाज और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदार है – फिर भी उसकी जड़ें परिवार में ही हैं।

रानी लक्ष्मी बाई, बेगम हजरत महल, सुधा मूर्ति, कल्पना चावला, निर्मला सीतारमण, किरण बेदी, मेरी कोम, पीटी उषा जैसी नारियाँ आधुनिक भारत की उदाहरण हैं, जिन्होंने पारिवारिक संतुलन के साथ-साथ राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों को भी सफलता से निभाया। उनके जीवन से यह सिद्ध होता है कि यदि नारी को उचित शिक्षा, अवसर और सम्मान मिले तो वह किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रबंधन कर सकती है।

पारिवारिक प्रबंधन : आध्यात्मिक दृष्टि से

भारतीय दर्शन में गृहस्थाश्रम को चार आश्रमों में सर्वोत्तम माना गया है, क्योंकि यह संतुलन और समर्पण का प्रतीक है। इस संतुलन को बनाए रखने वाली शक्ति नारी ही है। वह **'लक्ष्मी'** के रूप में समृद्धि देती है, **'सरस्वती'** के रूप में ज्ञान देती है, और **'अन्नपूर्णा'** के रूप में पोषण करती है। इसीलिए परिवार की नारी को **'गृहलक्ष्मी'** कहा गया है।
"नारी का स्वरूप केवल सौंदर्य नहीं, अपितु संयम और सामंजस्य की प्रतिमूर्ति है।"

नारी अपने त्याग और ममता से परिवार को आध्यात्मिक आधार देती है, जिससे घर 'घर' बनता है, केवल एक निवास नहीं।

प्रबंधन की आदर्श पाठशाला

यदि प्रबंधन को परिभाषित करें तो यह है –
"संसाधनों का उचित नियोजन एवं नियंत्रण ताकि लक्ष्य प्राप्त हो सके।" नारी इस परिभाषा की जीती-जागती मिसाल है।

❖ वह **संसाधन प्रबंधक** है – सीमित साधनों में अधिकतम उपयोग करती है।
❖ वह **मानव संसाधन प्रबंधक** है – परिवार के सदस्यों की क्षमताओं को पहचानती है।
❖ वह **संघर्ष प्रबंधक** है – मतभेदों को संवाद से सुलझाती है।
❖ वह **भावना प्रबंधक** है – सभी को स्नेह और सहानुभूति से जोड़ती है।
❖ और वह **संकट प्रबंधक** है – विपत्ति में धैर्य रखती है, समाधान खोजती है।

इस प्रकार **नारी में प्रबंधन के सभी गुण – योजना, संगठन, नेतृत्व, नियंत्रण और समन्वय – सहज रूप से उपस्थित हैं।**

नारी – परिवार की आत्मा

नारी वह ज्योति है जो अंधकार को प्रकाश में बदल देती है। वह परिवार के प्रत्येक कण में जीवन का संचार करती है। यदि नारी सशक्त, शिक्षित और आत्मनिर्भर है, तो परिवार सशक्त होता है; और यदि परिवार सशक्त है, तो समाज और राष्ट्र सशक्त बनते हैं।

अतः नारी केवल परिवार की "गृहिणी" नहीं, अपितु उसकी "गृहलक्ष्मी", "संस्कृति की वाहिका" और "जीवन की प्रबंधक" है।
"घर वही जहाँ माँ की मुस्कान हो,
परिवार वही जहाँ नारी का सम्मान हो।"

नारी के इस प्रबंधकीय स्वरूप का सम्मान करना ही सभ्यता की सच्ची पहचान है। वह बिना किसी प्रशिक्षण के, प्रेम, त्याग और विवेक से वह सब कर दिखाती है जो प्रबंधन के किसी संस्थान में सिखाया नहीं जा सकता।

अस्तु, नारी परिवार की कुशल प्रबंधक है – क्योंकि "**वह हृदय से सोचती है, बुद्धि से योजना बनाती है, हाथों से सृजन करती है और आत्मा से संबंधों को निभाती है।**"

उसका प्रबंधन केवल कार्य नहीं, एक जीवन-कला है – **जो समाज और संस्कृति दोनों को दिशा देती है।**

- गौरीशंकर वैश्य जी, 'विनम्र', आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ (उ. प्र.)

खुशी कोई मंजिल नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने का एक तरीका है। हर छोटे पल में आनंद ढूँढ़ना सीखो।

जो व्यक्ति सरल होता है, वह हर समस्या को सहजता से पार कर लेता है। सरलता ही जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है।

जीवन में सफलता के लिए तीन चीजें आवश्यक हैं: सही समय, सही निर्णय और लक्ष्य के प्रति अटूट विश्वास।

समय मौन होकर चलता है, पर अपने निशान हर जगह छोड़ जाता है। इसका सम्मान करें और इसे व्यर्थ न गवाएँ।

हमेशा इतने छोटे बनो कि हर व्यक्ति तुम्हारे मनुष्य की सबसे बड़ी पूँजी उसके अच्छे विचार हैं। विचार ही कर्म को दिशा देते हैं और कर्म ही भाग्य का निर्माण करता है।

क्षमा करना सीखो, क्योंकि यह न केवल दूसरों को शांत करता है, बल्कि आपको आंतरिक शांति और स्वतंत्रता भी प्रदान करता है।

जीवन की बाँसुरी: सरलता से चुनौतियों को मधुर बनाने की कला

जीवन में सरलता चुनौतियों को भी सहज और आसान बना देती है। हम किसी भी चुनौती को जितना 'दिलचस्प' बना लेंगे, उससे निपटना उतना ही सरल हो जाएगा।
यहाँ 'दिलचस्प' होने का अर्थ यह है कि हम चुनौतियों का सामना इस प्रकार करें कि हमारा मन प्रफुल्लित और उत्साह से भरा रहे।

हमारे भीतर एक ऐसी संपत्ति, योग्यता और मौलिकता विद्यमान है, जिसका सदुपयोग कर लिया जाए, तो हर बड़ी चुनौती स्वतः ही मनोरंजक (दिलचस्प) बन जाएगी। यह अद्भुत योग्यता शरीर और इंद्रियों सहित हमारे अंतःकरण की सरलता से आती है, यानी हमें अपने भीतर से सरल होना होगा। यही सरलता जब परमात्मा के प्रति होती है, तो वह **"भक्ति"** कहलाती है; और जब यह संसार के प्रति होती है, तो वह "सदाचार" कहलाती है।

प्रश्न: भीतर की इस सरलता में कैसे उतरें?

इस गहन प्रश्न का उत्तर एक अति सुंदर उदाहरण में छिपा है – **"बाँसुरी"।**
छोटे से बाँस से बनी बाँसुरी, जिसमें कई छिद्र होते हैं, वह इतना मधुर संगीत कैसे देती है?
जब बाँसुरी से पूछा गया कि **"तुम कैसे इतना मीठा बोलती हो, और कृष्ण की भी इतनी प्रिय कैसे बन गई हो?"**

तो बाँसुरी ने सहजता से उत्तर दिया: **"न तो मैंने कोई विशेष साधना की, न ही कोई तपस्या। इसका बस एक ही कारण है– मेरे भीतर मेरा कुछ भी नहीं है। जैसे कृष्ण मुझे बजाते हैं, वैसे ही मैं बज लेती हूँ।“**

इसका सीधा और गहरा अर्थ यह है कि जब हम स्वयं को ऊपर वाले के संकेत के अनुसार चलने देते हैं, तो हमारे भीतर सहज ही सरलता उतर आती है। और यही परमात्म-समर्पित सरलता बड़ी-बड़ी चुनौतियों को भी दिलचस्प बनाकर आसान कर देती है।

🙏**हे परमेश्वर...**

हम जीवन में हर चुनौती और मुश्किल का सामना बड़े धैर्य और धीरज से करें, और हमेशा सरल भाव से उन्हें सुलझाने का प्रयत्न करें। यही प्रार्थना है कि सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न रहें और अपने जीवन को सरलता के मार्ग पर ले जाने का यत्न करें।

धन्यवाद।

– मधु अजमेरा जी, ग्वालियर (म.प्र.)

पराली जलाने की आग में झुलसता उत्तर भारत : समाधान किसानों और पर्यावरण दोनों के हित में

हर वर्ष अक्टूबर–नवंबर के महीनों **में पंजाब और हरियाणा के खेतों से उठने वाला धुआँ दिल्ली सहित पूरे उत्तर भारत की साँसें रोक देता है।** पराली जलाना किसानों की विवशता और नीतिनिर्माताओं की विफलता दोनों का परिणाम है। जब तक किसान के हित, कृषि की आवश्यकताएँ और पर्यावरण संरक्षण को एक साथ जोड़कर देखा नहीं जाएगा, तब तक न तो प्रदूषण घटेगा और न ही ग्रामीण भारत को स्थायी आजीविका का मार्ग मिलेगा।

हर वर्ष जब धान की कटाई का मौसम आता है, तब पंजाब और हरियाणा के खेतों से उठने वाला धुआँ आसमान को धुंध से भर देता है। यह केवल खेतों की आग नहीं होती, बल्कि भारत की कृषि नीति, आर्थिक असमानता और पर्यावरणीय असंतुलन की जलती हुई तस्वीर होती है। दिल्ली तथा उसके आस-पास के क्षेत्र इस धुएँ से ढक जाते हैं और वायु गुणवत्ता अत्यंत गंभीर स्तर तक पहुँच जाती है।
कानूनी रूप से पराली जलाना प्रतिबंधित है, फिर भी किसान इसे हर साल दोहराते हैं क्योंकि इसके पीछे अनेक सामाजिक और आर्थिक कारण जुड़े हैं।

पराली जलाने का मूल कारण खेतों में बचा हुआ धान का ठूँठ होता है। जब धान की फसल कट जाती है, तब खेत में रह गए अवशेष को हटाने के लिए किसानों के पास न समय होता है न साधन। पंजाब और हरियाणा की कृषि व्यवस्था मुख्य रूप से धान और गेहूँ पर आधारित है। सन् 1960 के दशक की हरित क्रांति ने इन राज्यों को देश का अन्न भंडार तो बना दिया, परंतु कृषि को एकरूपी और जल–प्रधान भी बना दिया। भूजल के अत्यधिक दोहन को रोकने के लिए सन् 2009 में पंजाब में "उप–जल संरक्षण अधिनियम" लागू किया गया, जिसके अंतर्गत धान की रोपाई जून के अंत तक करने का निर्देश दिया गया ताकि मानसूनी वर्षा का लाभ लिया जा सके।

परिणामस्वरूप धान कटाई और गेहूँ की बुवाई के बीच केवल दस से बीस दिन का अंतर रह गया। इतने कम समय में किसान पराली को एकत्रित या सड़ाकर खेत तैयार नहीं कर सकते, इसलिए वे सबसे तेज़ और सस्ता उपाय–जलाना–चुन लेते हैं।

दूसरा बड़ा कारण आर्थिक है। पराली हटाने या निपटाने के लिए जो मशीनें चाहिए–जैसे सुपर स्ट्रॉ प्रबंधन प्रणाली, हैप्पी सीडर, बेलर या रोटावेटर–वे अत्यंत महँगी हैं। छोटे और सीमांत किसान जिनकी जोत तीन हेक्टेयर से भी कम है, वे इन मशीनों को खरीदने या किराए पर लेने में असमर्थ हैं। उदाहरण के लिए, हैप्पी सीडर का किराया लगभग दो से तीन हज़ार रुपये प्रति एकड़ पड़ता है, जबकि पराली जलाने में केवल माचिस और थोड़े डीज़ल का खर्च आता है। यही व्यावहारिकता इस समस्या को गहराई तक जकड़े हुए है।

तीसरा कारण पराली का कम उपयोग मूल्य है। पंजाब और हरियाणा में बोई जाने वाली अधिकतर धान की किस्में साधारण होती हैं, जिनमें सिलिका की मात्रा अधिक होती है। ऐसी पराली पशु चारे के रूप में प्रयोग योग्य नहीं होती और न ही इससे जैव ईंधन या खाद आसानी से बनाई जा सकती है। पूर्वी भारत के राज्यों में धान की पराली पशुओं के चारे के रूप में प्रयोग में आती है, परंतु पंजाब-हरियाणा में यह उपयोग सीमित है। इसीलिए यहाँ पराली किसानों के लिए किसी आर्थिक लाभ का साधन नहीं बन पाती।

चौथा कारण है श्रम की कमी और जोत का विखंडन। प्रवासी मजदूरों की संख्या घट रही है, और छोटे खेतों में मशीनरी लगाने की क्षमता नहीं है। समय की कमी और श्रमिकों के अभाव में किसान अगली फसल बोने की जल्दी में पराली को जला देते हैं।

सामाजिक दृष्टि से भी पराली जलाना वर्षों से एक स्वीकृत प्रक्रिया बन चुकी है। किसानों को यह लगता है कि खेत की सफाई का यही सबसे आसान और पारंपरिक तरीका है। कानूनों और जुर्मानों के बावजूद यह प्रथा इसलिए जारी है क्योंकि प्रवर्तन ढीला है और राजनीतिक दबावों के कारण प्रशासन कठोर कार्रवाई नहीं कर पाता। वर्ष 2023 में पंजाब में लगभग साठ हज़ार पराली जलाने की घटनाएँ दर्ज की गईं, जबकि जुर्माना और निगरानी दोनों व्यवस्था में थे।

अब प्रश्न यह है कि इस समस्या का स्थायी समाधान क्या हो सकता है?
स्पष्ट है कि केवल प्रतिबंध या दंड इस समस्या को समाप्त नहीं कर सकते। आवश्यक है कि ऐसी रणनीति अपनाई जाए जो किसान की आजीविका और पर्यावरण संरक्षण दोनों को साथ लेकर चले।

पहला समाधान है फसल विविधीकरण। पंजाब और हरियाणा की भूमि लगातार धान-गेहूँ चक्र से थक चुकी है। जल स्तर भी नीचे जा रहा है। अतः मक्का, दलहन, तिलहन और बागवानी फसलों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इन फसलों के लिए यदि सरकार न्यूनतम

समर्थन मूल्य, बीमा सुरक्षा और निश्चित खरीद सुनिश्चित करे तो किसान धीरे-धीरे धान पर निर्भरता कम कर सकते हैं। हरियाणा की "भावांतर भरपाई योजना" इस दिशा में एक अच्छा उदाहरण है, जिसमें किसानों को मूल्य अंतर की भरपाई दी जाती है।

दूसरा समाधान है यंत्रीकरण और साझा संसाधन। किसानों को मशीनें साझा उपयोग के लिए उपलब्ध कराई जाएँ। पंचायत या सहकारी समितियों के स्तर पर "कस्टम हायरिंग केंद्र" स्थापित हों, जहाँ से किसान कम किराए पर हैप्पी सीडर या सुपर स्ट्रॉ प्रबंधन प्रणाली जैसी मशीनें ले सकें। केंद्र सरकार की **"फसल अवशेष प्रबंधन योजना"** के अंतर्गत पंजाब और हरियाणा में एक लाख से अधिक मशीनें बाँटी गई हैं, पर इनकी पहुँच सभी किसानों तक नहीं हो पाई है। यदि हर गाँव में सामुदायिक यांत्रिक केंद्र बने, तो किसान पराली जलाने से बचेंगे।

तीसरा उपाय है पराली का औद्योगिक उपयोग। पराली को कचरा न मानकर एक संसाधन के रूप में देखा जाए। इससे जैव ऊर्जा, एथेनॉल, कागज़, पैकेजिंग और निर्माण सामग्री तैयार की जा सकती है। उदाहरण के लिए, भारतीय तेल निगम की पानीपत जैव रिफाइनरी प्रतिवर्ष लगभग दो लाख टन पराली से एथेनॉल बनाती है। यदि इस प्रकार की परियोजनाएँ हर जिले में स्थापित हों तो पराली किसानों के लिए आय का स्रोत बनेगी और जलाने की आवश्यकता कम होगी। सरकार को परिवहन सहायता, खरीद अनुबंध और स्थायी बाज़ार उपलब्ध कराने की नीति बनानी चाहिए।

चौथा कदम होना चाहिए कृषि–पर्यावरणीय समय निर्धारण। धान की छोटी अवधि वाली किस्में जैसे पी.आर.–126 या डी.आर.आर. धान–44 अपनाने से किसानों को फसल कटाई और बुवाई के बीच कुछ अतिरिक्त दिन मिल सकते हैं। इस समय का उपयोग पराली प्रबंधन में किया जा सकता है।
इसके साथ–साथ परिशुद्ध कृषि यानी सटीक तकनीकी साधनों का प्रयोग, जल–सिंचाई प्रणाली में सुधार और जैविक खाद उपयोग से भी पर्यावरणीय लाभ मिलेगा।

पाँचवाँ, सामुदायिक प्रोत्साहन और जनजागरूकता। पराली न जलाने वाले किसानों को आर्थिक प्रोत्साहन दिया जाए, गाँव स्तर पर प्रतियोगिता आयोजित हो और "शून्य दहन ग्राम" घोषित किए जाएँ। दिल्ली, पंजाब और हरियाणा में "पुसा डीकंपोजर" नामक जैविक घोल के प्रयोग से पराली को खेत में ही खाद में बदला जा रहा है। यदि इस तकनीक को बड़े पैमाने पर अपनाया जाए तो पराली जलाने की आवश्यकता नहीं बचेगी।

छठा, प्रशासनिक तालमेल और नीति–समन्वय। केंद्र तथा राज्य सरकारों के बीच सामंजस्य होना चाहिए ताकि कृषि, पर्यावरण और ऊर्जा विभाग एक साझा योजना के अंतर्गत काम करें। पराली प्रबंधन को ग्रामीण रोजगार योजना, जैव ऊर्जा मिशन और जलवायु परिवर्तन कार्यक्रमों से जोड़ा जा सकता है। उदाहरण के लिए, मनरेगा के अंतर्गत पराली एकत्रीकरण या जैव खाद इकाइयों में कार्य को रोजगार से जोड़ा जा सकता है।

सातवाँ, शहरी–ग्रामीण सहभागिता भी इस दिशा में उपयोगी होगी। दिल्ली जैसे महानगर जहाँ प्रदूषण का सबसे अधिक प्रभाव होता है, उन्हें अपने सामाजिक उत्तरदायित्व निधि के माध्यम से पंजाब–हरियाणा के किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करनी चाहिए। इससे प्रदूषण के स्रोत और पीड़ित क्षेत्र के बीच साझा जिम्मेदारी की भावना विकसित होगी।
इसके साथ-साथ तकनीकी निगरानी प्रणाली को भी सशक्त बनाना चाहिए। उपग्रह आधारित आँकड़ों से पराली जलाने की घटनाओं की त्वरित जानकारी मिल सकती है, जिससे स्थानीय प्रशासन समय रहते हस्तक्षेप कर सके। परंतु यह हस्तक्षेप केवल दंडात्मक न होकर सहयोगात्मक होना चाहिए।

इन सभी उपायों का उद्देश्य यह है कि किसान को दोषी नहीं बल्कि भागीदार बनाया जाए। किसान पराली इसलिए जलाते हैं क्योंकि उनके पास व्यावहारिक विकल्प नहीं हैं। जब उन्हें ऐसे विकल्प मिलेंगे जो सस्ते, लाभकारी और पर्यावरण के अनुकूल हों, तो वे स्वयं इस समस्या के समाधान का हिस्सा बनेंगे।
अंततः यह समझना होगा कि पराली जलाना केवल पर्यावरणीय संकट नहीं बल्कि सामाजिक–आर्थिक असंतुलन का परिणाम है। इसे रोकने के लिए किसानों के कल्याण, नीति सुधार और तकनीकी समर्थन का समन्वय आवश्यक है। यदि पराली को ऊर्जा, उद्योग और जैविक खाद के रूप में उपयोग में लाया जाए, तो यह प्रदूषण का कारण नहीं बल्कि विकास का साधन बन सकती है।

पराली जलाने की समस्या का समाधान केवल प्रतिबंधों और दंड से नहीं, बल्कि संवेदनशील नीति, किसानों की सहभागिता और तकनीकी नवाचार से निकलेगा। जब फसल विविधीकरण, यंत्रीकरण, पराली का औद्योगिक उपयोग और सामुदायिक प्रोत्साहन एक साथ काम करेंगे, तब ही स्वच्छ वायु और सुरक्षित कृषि दोनों संभव होंगी। यह संतुलन ही उत्तर भारत को पराली की आग से मुक्त करने और टिकाऊ कृषि विकास की दिशा में अग्रसर करने का एकमात्र मार्ग है।

-प्रियंका सौरभ जी, कवयित्री, स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार, हिसार (हरियाणा)

विवाह पंचमी: चेतना और प्रकृति शक्ति का असाधारण मिलन

मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को भगवान श्रीराम और माता सीता के पावन विवाह के उपलक्ष्य में "**विवाह पंचमी**" का उत्सव मनाया जाता है। यह केवल एक विवाह संस्कार नहीं, बल्कि चेतना (श्रीराम) और प्रकृति शक्ति (माता सीता) के मिलन का एक असाधारण और परम कल्याणकारी योग है।

सीता स्वयंवर की दिव्य कथा

माता सीता, राजा जनक की पुत्री होने के साथ ही साक्षात् धरती माता की पुत्री थीं, इसलिए उन्हें "**भूमिजा**" भी कहा जाता है। सीता माता असाधारण प्रतिभा और विलक्षण शक्ति का स्वरूप थीं। जिस विशालकाय शिव धनुष (पिनाक) को लंकापति रावण जैसे बलशाली भी हिला न सके, उसे माता सीता ने खेल-खेल में उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर रख दिया था। राजा जनक यह भली-भाँति समझते थे कि सीता का विवाह उन्हीं से हो, जो उनकी पुत्री जैसी असाधारण प्रतिभा और शक्ति रखते हों। इसी कारण उन्होंने एक स्वयंवर का आयोजन किया और यह अटूट शर्त रखी कि: **"जो भी राजा इस शिव धनुष को उठाकर उसकी प्रत्यंचा (डोरी) चढ़ाएगा, उसी से सीता का विवाह संपन्न होगा।"**

धनुष भंग और विवाह

स्वयंवर में दूर-दूर से आए कोई भी राजा शिव धनुष को उठा नहीं सके। तब गुरु विश्वामित्र की आज्ञा पाकर, साधु वेश में आए प्रभु श्री राम ने धनुष को उठाया। प्रत्यंचा चढ़ाने के लिए जैसे ही उन्होंने धनुष को मोड़ा, वह भीषण ध्वनि के साथ दो भागों में विभाजित (टूट) हो गया। वह **शुभ दिवस मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी** का था, और उसी पावन तिथि पर दोनों का विवाह संपन्न हुआ।

भगवान राम और सीता के विवाह के बाद, इसी विवाह पंचमी तिथि पर **राम के तीनों छोटे भाईयों– लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न का विवाह** भी क्रमशः **सीता की तीनों बहनों– उर्मिला, माधवी और श्रुतकीर्ति** से कराया गया।

दिव्य भेंट: माता जानकी विवाह के उपरांत अपने साथ दहेज में कई हीरे-जवाहरात और दासियाँ लेकर नहीं, बल्कि **काली माता की एक दिव्य मूर्ति लेकर अयोध्या आई थीं।** इस मूर्ति को अयोध्या में प्रतिष्ठित किया गया**, जिसे आज छोटी देवकाली के नाम से जाना जाता है।**

पूरा पढ़े www.

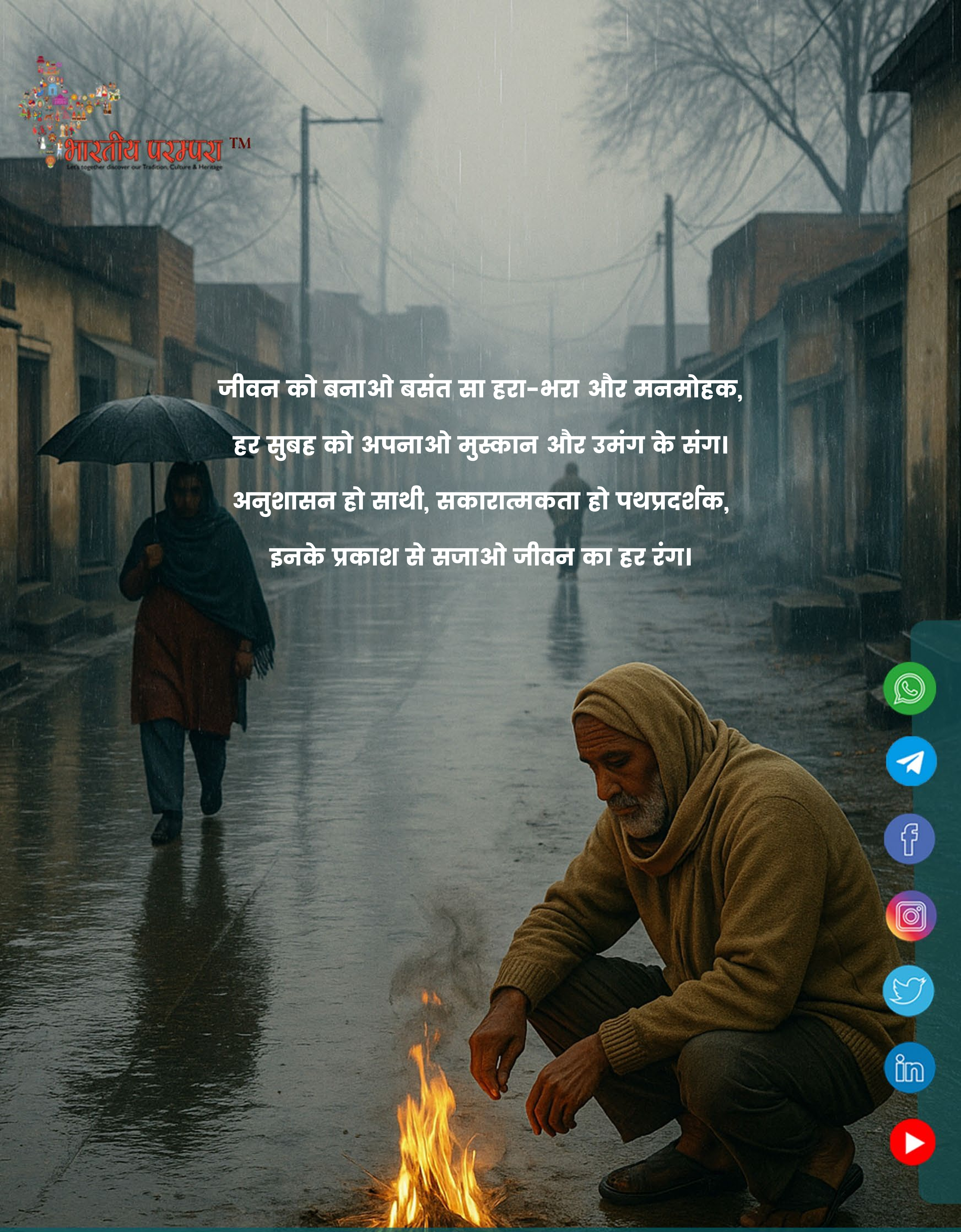

जीवन को बनाओ बसंत सा हरा-भरा और मनमोहक,

हर सुबह को अपनाओ मुस्कान और उमंग के संग।

अनुशासन हो साथी, सकारात्मकता हो पथप्रदर्शक,

इनके प्रकाश से सजाओ जीवन का हर रंग।

73030 21123
www.bhartiyaparampara.com